प्रचारक ग्रन्थावली परियोजना
हिन्दी प्रचारक संस्थान

पो. बॉ. ११०६, पिशाचमोचन, वाराणसी-२२१००१ के लिए विजय प्रकाश बेरी द्वारा प्रकाशित तथा भार्गव ऑफसेट, वाराणसी में मुद्रित।

Burl Stax
PK
2097
.H3
1989

मूल्य : ५०.००

तृतीय संस्करण जनवरी १९८९

प्रचारक ग्रंथावली परियोजना—१

भारतेन्दु समग्र
BHARTENDU SAMAGRA

Collected works of Bhartendu Harishchandra,
Edited by Hemant Sharma

भारतेन्दु ग्रंथावली

Bharatendu Samagra

भारतेन्दु समग्र

सम्पादन : **हेमन्त शर्मा**

सभी खण्ड और अनेक अलभ्य सामग्री एक जिल्द में

प्रचारक ग्रंथावली परियोजना
हिन्दी प्रचारक संस्थान
पो. बॉ. ११०६, पिशाचमोचन, वाराणसी-२२१००१

उर्दू का स्यापा

जून १८७४ की 'हरिश्चन्द्र चन्द्रिका' में प्रकाशित

अलीगढ़ इंस्टिट्यूट गज़ट और बनारस अखबार के देखने से ज्ञात हुआ कि बीबी उर्दू मारी गई और परम अहिंसानिष्ठ होकर भी राजा शिवप्रसाद ने यह हिंसा की — हाय हाय! बड़ा अंधेर हुआ मानो बीबी उर्दू अपने पति के साथ सती हो गई । यद्यपि हम देखते हैं कि अभी साढ़ तीन हाथ की ऊँटनी सी बीबी उर्दू पागुर करती जीती है, पर हमको उर्दू अखबारों की बात का पूरा विश्वास है । हमारी तो कहावत है —''एक मियाँ साहेब परदेस में सरिश्तेदारी पर नौकर थे । कुछ दिन पीछे घर का एक नौकर आया और कहा कि मियाँ साहब, आपकी जोरू राँड हो गई । मियाँ साहब ने सुनते ही सिर पीटा, रोए गाए, बिछौने से अलग बैठे, सोग माना, लोग भी मातम-पुरसी को आए । उनमें उनके चार पाँच मित्रों ने पूछा कि मियाँ साहब आप बुद्धिमान होके ऐसी बात मुँह से निकालते हैं, भला आपके जीते आपकी जोरू कैसे राँड होगी ? मियाँ साहब ने उत्तर दिया —''भाई बात तो सच है, खुदा ने हमें भी अकिल दी है, मैं भी समझता हूँ कि मेरे जीते मेरी जोरू कैसे राँड़ होगी । पर नौकर पुराना है, झूठ कभी न बोलेगा ।'' जो हो 'बहर हाल हमें उर्दू का गम वाजिब है'' तो हम भी यह स्यापे का प्रकर्ण यहाँ सुनाते हैं । हमारे पाठक लोगों को रुलाई न आवे तो हँसने की भी उन्हें सौगन्द है, क्योंकि हाँसा-तमासा नहीं बीबी उर्दू तीन दिन की पट्ठी अभी जवान कट्ठी मरी है ।

अरबी, फारसी, पशतो, पंजाबी इत्यादि कई भाषा खड़ी होकर पीटती हैं

है है उर्दू हाय हाय । कहाँ सिधारी हाय हाय । मेरी प्यारी हाय हाय । मुंशी मुल्ला हाय हाय । वल्ला बिल्ला हाय हाय । रोय पीटैं हाय हाय । टाँग घसीटैं हाय हाय । सब छिन सोचैं हाय हाय । डाढ़ी नोचैं हाय हाय । दुनिया उलटी हाय हाय । रोजी बिलटी हाय हाय । सब मुखतारी हाय हाय । किसने मारी हाय हाय । खबर नवीसी हाय हाय । दाँत-पीसी हाय हाय । एडिटर-पोसी हाय हाय । बात फरोशी हाय हाय । वह लस्सानी हाय हाय । चरब-जुबानी हाय हाय । शोख-बयानी हाय हाय । फिर नहिं आनी हाय हाय ।